बड़ा दिमाग समस्या सुलझाने में मदद करता है

सिर बड़ा सरदार का, यह कहावत काफी प्रचलित रही है। यह आम धारणा भी है कि जितना बड़ा दिमाग होगा बुद्धि भी उतनी ज़्यादा होगी। हालांकि मनुष्यों के बारे में प्रचलित इस धारणा को तो कई दशकों पहले ध्वस्त किया जा चुका है मगर एक बार फिर शोधकर्ताओं ने चिड़ियाघर में पले जानवरों के अवलोकनों के आधार पर बताया है कि बड़े दिमाग वाले प्राणियों में समस्या सुलझाने की क्षमता बेहतर होती है। वैसे इस बार यह अध्ययन एक ही प्रजाति के विभिन्न प्राणियों पर नहीं बल्कि अलग-अलग प्रजातियों के प्राणियों पर किया गया है।

व्योमिंग विश्वविद्यालय की सारा बेन्सन-अमराम और उनके साथियों ने यह अध्ययन डिब्बे में रखे भोजन को पाने की क्षमता के आधार पर किया। उन्होंने डिब्बों में भोजन बंद करके नॉर्थ अमेरिकन चिड़ियाघर में 39 प्रजातियों के 140 मांसाहारी प्राणियों को अलग-अलग पेश किया। उन्होंने पाया कि डिब्बों को खोलने के मामले में उन प्राणियों का प्रदर्शन बेहतर रहा जिनके शरीर के भार की तुलना में अपेक्षाकृत ज़्यादा बड़े दिमाग हैं। जैसे रिवर ओटर्स और भालू। दूसरी ओर, मीरकाट और नेवले तो लगभग नाकाम ही रहे।

बेन्सन-अमराम का कहना है कि समस्या सुलझाने का सम्बंध संज्ञान क्षमता से है मगर बुद्धिमत्ता बहुत पेचीदा चीज़ है जिसे मापना असंभव नहीं तो मुश्किल ज़रूर है। इसलिए उनका अध्ययन बुद्धिमत्ता के बारे में कुछ नहीं कहता।

उनके अध्ययन को लेकर कई सवाल भी पैदा हुए हैं। जैसे क्या पूरे दिमाग का आकार महत्वपूर्ण है या दिमाग के कुछ हिस्सों का ज़्यादा असर पड़ता है। बेन्सन-अमराम के दल ने प्रयोग में शामिल विभिन्न प्राणियों के दिमाग के कंप्यूटर मॉडल्स निर्मित किए और दिमाग के विभिन्न हिस्सों के आकार का सम्बंध समस्या सुलझाने की क्षमता से देखने की कोशिश की। उनका मत है कि प्राणी के दिमाग की कुल तुलनात्मक साइज़ ही क्षमता का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करती है।

एक सवाल यह भी है कि ये सारे प्राणी चिड़ियाघर के कृत्रिम माहौल में पले हैं। इनका प्रदर्शन मुक्त प्राणियों की क्षमता का द्योतक हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।

वैसे इस अध्ययन के निष्कर्ष सामाजिक-मस्तिष्क परिकल्पना के विरुद्ध जाते हैं। सामाजिक मस्तिष्क परिकल्पना के अनुसार जब प्राणी समूहों में रहते हैं, तो उनके दिमाग बड़े भी हो जाते हैं और संज्ञान क्षमता भी बढ़ती है। अर्थात संज्ञान क्षमता के विकास में सामूहिक जीवन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। दरअसल, बेन्सन-अमराम का कहना है कि बंदी अवस्था में अवलोकन से यह पता चलता है कि कोई प्राणी क्या करने की क्षमता रखता है। यह अलग बात है कि जंगल में यह क्षमता उसके व्यवहार में कितनी झलकती है। ***(स्रोत फीचर्स)***